Vol III Issue VII April 2014 ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 7 | April. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X

Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

महाकवि तुलसीदास

शीला य. भंडारि

सहायक प्रवक्ता हिन्दी विभाग , कर्नाटक कला महाविद्यालय, धारवड ,(कर्नाटक) भारत.

***सारांश* :-**

गोस्वामीजी सन्देशों, आदर्शों एवं उदात्त कल्पनाओं के कवि हैं। उन्होंने इनकी अभिव्यक्ति के लिए जनभाषा को माध्यम के रूप में लिया, जो तब तक पूर्णतः उपेक्षित थी। हिन्दी भाषा को अपनाकर उन्होंने इसकी सामर्थ्य का द्वार खोल दिया। इसीलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन उचित ही मालूम पड़ता है, "यह कवि हिन्दी को एक प्रौढ़ भाषा सिद्ध करने के लिए काफी है।"

अतः भारतीय जनता का यह प्रतिनिधि कवि, जिसने भारतीय संस्कृति के चिन्मय आकाशदीप को प्रज्वलित कर अनुकरणीय जीवन–सरणि का निर्माण किया, हमारे लिए वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, भवभूति इत्यादि से भी अधिक प्रिय है, ऐसा हम निःसंकोच कह सकते हैं। धन्य हो महाकवि ! तुम्हारे बारे में महाकवि हरिऔध ने ठीक ही कहा है –

कविता करके तुलसी न लसे।
कविता लसी पा तुलसी की कला।।

प्रमुख शब्द :

कवि, भक्त, दार्शनिक, पंडित, नीतिज्ञ

***प्रस्तावना* :**

गोस्वामी तुलसीदास – विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी में सम्पूर्ण देश में मुसलमानी शासकों का एकक्षत्र राज्य था। हिन्दू जनता की अवस्था बड़ी ही दयनीय तथा शोचनीय हो गई थी उस पर मुसलमानी शासकों द्वारा निरन्तर अत्याचार किये जा रहे थे। हिन्दू जनता अपने भविष्य के प्रति पूर्णतः उदासीन बन चुकी थी। यथार्थ में इन कठिन परिस्थितियों में उसका जीवन भार स्वरूप हो गया था। किसी ओर से भी उसे आशा की किरण दिखाई नहीं देती थी।

ऐसे समय में गोस्वामी तुलसीदास का आविर्भाव हुआ। उन्होंने मर्यादा पुरूषोत्तम राम के सगुण तथा लोकरक्षक रूप को हिन्दू जनता के सम्मुख रखा और जनता के हृदय में आशा का संचार किया।

गोस्वामी तुलसीदास का जन्म संवत् 1589 में बांदा जिले के राजपुर गाँव में हुआ था। वे सरयूपारी ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। अभुक्तमूल नक्षत्र में पैदा होने के कारण माता–पिता ने इन्हें त्याग दिया था। बाल्यावस्था इनकी दरिद्रता में बीती। गुरू नरहरिदास से राम की कथा सुनी और नाना वेदशास्त्र तथा पुराणों का गम्भीर अध्ययन करके गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया। इन्हें अपनी पत्नी रत्नावती से बहुत प्रेम था – एक बार इनकी पत्नी बिना इनसे पूछे अपने नैहर चली गई, तुलसीदास भी उसके पीछे–पीछे वहाँ पहूँच गये। इस पर पत्नी ने क्रोध में आकर इनको अपमानित किया और कह –

'अस्थि चर्म मय देह मम, तामें ऐसी प्रीति।
होति जु तब भगवान में, होति न तो भवभीति ।।'

वहीं से उनमें वैराग्य की भावना उदय हुई। वास्तव में, 'रामचरितमानस' जैसे महान् ग्रन्थ की रचना की मूल प्रेरणा उन्हें इन्हीं पंक्तियों से मिली।

इस प्रकार गृहस्थी से विरक्त होकर गोस्वामी जी ने पच्चीस वर्ष तक अनेक तीर्थस्थानों का भ्रमण किया। चित्रकूट, काशी, प्रयाग? अयोध्या और मथुरा–वृन्दावन आदि में रहकर उन्होंने अपने विविध ग्रन्थों की रचना की, वैसे तो इन्होंने अनेक रचनाएँ कीं, किन्तु रामचरितमानस, विनय–पत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली, बरवै रामायण, पार्वती–मंगल, राम सतसई, जानकी–मंगल, वैराग्य–संदीपनी, रामज्ञा प्रश्न और रामलला नहछू आदि बारह ग्रन्थ प्रामाणिक माने जाते हैं। गोस्वामीजी का गौरव और महत्व रामचरितमानस पर अधिकांश आधारित है। इस ग्रन्थ में हिन्दू धर्म का सच्चा स्वरूप व्यक्त किया गया है, वह अलौकिक पुरूष की अलौकिक कृहज है। जीवन के सरलतम और जटिलतम सभी प्रश्नों का उत्तर इस ग्रंथ में मिलता है। इस कृति में गुरू–शिष्य, भाई–भाई पिता–पुत्र और माता–पुत्र के आदर्श परिवारिक व्यवहारों की सुन्दर व्याख्या हुई है। हिन्दू–गृहस्थ जीवन की समस्त व्यक्तिगत, सामाजिक तथा पारिवारिक समस्याओं का मर्यादापूर्ण समाधान इस ग्रन्थ–रत्न की सबसे महान् विशेषता है। आज 'रामचरितमानस' समस्त उत्तरी भारत की जनता का कंठहार बन गया है।

'विनय–पत्रिका' भक्ति का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है। भक्ति–रस का पूर्ण परिपाक जैसा 'विनय–पत्रिका' में देख गया है वैसा अन्यत्र नहीं। यह तुलसी के आध्यात्मिक विचारों का भण्डार है। 'गीतावली' में राम के कोमल जीवन का वर्णन है, किन्तु 'कवितावली' उनके वीरत्व और शौर्य से आप्लावित है। इसमें लंकादहन और युद्ध का बड़ा ही सजीव तथा ओजपूर्ण वर्णन है। 'दोहावली' में चातक की अनन्यता पराकाष्ठा पर पहुँच गयी है। भक्त और भगवान् के सम्बन्ध की जैसा विशद व्याख्या दोहावली में है वैसी उनके अन्य किसी ग्रंथ में नहीं।

तुलसीदास की जिस समय साहित्य में अवतरित हुये उस समय तक अवधि काव्य रचना की भाषा का रूप धारण कर चुकी थी। जायसी आदि सूफ़ी कवियों ने अपने काव्य का माध्यम अवधी भाषा को ही बनाया। परन्तु वह अवधी का ग्रामीण रूप था। गोस्वामी संस्क्रुतज्ञ और शास्त्रज्ञ थे, अतः उन्होंने कुछ स्थलों पर ठेठ अवधी का प्रयोग करते हुए भी अधिकांश स्थलों में सस्कृत मिश्रित अवधी का व्यवहार किया है। उनके 'रामचरितमानस' में अवधी के साहित्यिक तथा परिमार्जित रूप के दर्शन मिलते हैं। संस्कृत की कोमल–कान्त पदावली का समावेश करके उन्होंने अवधी में अपूर्व माधुर्य का संचार किया है। ब्रजभाषा में भी अत्यन्त सुन्दर रूप से 'सुरसागर' की रचना हो चुकी थी। तुलसीदास ने 'विनय–पत्रिका', 'कवितावली' और 'गीतावली' की रचना ब्रजभाषा में करके अपनी प्रतिभा और काव्य–शक्ति का पूर्ण परिचय दिया है। उन्होंने ब्रजभाषा में भी अपनी संस्कृत पदावली का सम्मिश्रण किया है। 'कवितावली' की ब्रजभाषा बहुत ही परिष्कृत और लालित्यपूर्ण है। भाषा सर्वत्र भावनानुकूल है। भावों के अनुसार उनका रूप कर्कश और मधुर हो जाता है। इस प्रकार गोस्वामी जी का अवधी और ब्रजभाषा दोनों पर ही समान अधिकार है। दोनों में संस्कृत का समावेश करके एक नवीन चमत्कार उत्पन्न करने की सामर्थ्य अकेले तुलसी में है।

तुलसीदास जी ने अपने ग्रन्थों की रचना अनेक प्रकार की शैलियों में की है और उनमें विविध छन्दों का प्रयोग किया है। 'रामचरितमानस' में उन्होंने जायसी की तरह दोहे–चौपाइयों का क्रम रखा है। साथ ही हरिगीतिका और सोरठा आदि छन्दों का भी प्रयोग किया है। 'कवितावली' में सवैया, कवित्त और छप्पय आदि छन्दों का प्रयोग है, जो भाटों की परम्परा के अनुसार है। विनयपत्रिका और 'गीतावली' में महात्माओं के गीतों की प्रणाली को स्वीकार किया गया है। 'दोहावली' और 'वरवै रामायण' में छोटे छन्दों में उपदेश समाहित है।

गोस्वामीजी ने अपनी रचनाओं में भावों का प्रकाशन इस कुशलता से किया है कि उनमें अलंकारो का समावेश स्वाभाविक रूप से हुआ है। केशव की तरह अलंकारों का प्रयोग उन्होंने चमत्कार–प्रदर्शन अथवा अपने पांडित्य के प्रदर्शन निमित्त नहीं किया है। अर्थालंकारों के साथ–साथ शब्दालंकारों का भी सुन्दर प्रयोग किया है। इनकी कविता में उपमा, उत्प्रेक्षा, उल्लेख, रूपक, अतिशयोक्ति, दृष्टान्त, असंगत आदि अलंकारों का प्रयोग खूब हुआ है। यमक, श्लेष आदि अलंकार भी स्थान–स्थान पर विद्यमान हैं। उपमाएँ तो बजोड़ हैं।

महाकवि तुलसीदास का भारतीय जनता पर व्यापक प्रभाव है। इसका कारण उनका उदार और प्रतिभाशाली साहित्यिक व्यक्तित्व है। उनकी अनुभूतियाँ मानव–मात्र की अनुभूतियाँ हैं। उन्होंने अपने विचारों की सत्यता, गम्भीर अध्ययन और साग्राहिणी प्रवृत्ति से सबको मोहित कर लिया है। भिन्न–भिन्न पुराणों और शास्त्रों से उन्होंने भारतीय संस्कृति के आधारभूत सिद्धान्तों और तत्वों को एकत्रित करके समयानुसार अपनी रचनाओं में उनको व्यक्त किया है। इसे उनकी दूरदर्शिता और सारग्राहिणी प्रवृत्ति का ही प्रतिफल कह सकते हैं। तुलसीदासजी ने जो कुछ लिखा है वह 'स्वान्तःसुखाय' ही लिखा है। उपदेश देने के लिए, उन्होंने अपने काव्य का सृजन नहीं किया। इसी कारण उनका लक्ष्य सौन्दर्य की पराकाष्ठा पर पहुँच गया है। सुन्दरता का आदर्श यही हैं कि वह प्रतिक्षण नवीनता को धारण करे। यही कारण है जो तुलसीदासजी के काव्य में प्रत्येक बार हमें नवीनता का आभास होता है। तुलसी ने मानव–प्रकृति की अन्तर्दशाओं का अत्यन्त सूक्ष्म निरीक्षण किया है। इसी कारण उन्होंने चरित्र–चित्रण में अपूर्व सफलता प्राप्त की है।

उपसंहार :

तुलसीदास की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। वह भक्त, दार्शनिक, पंडित, कवि, नीतिज्ञ, समाज–सुधारक एवं विचारक आदि अनेक रूपों में प्रकट हुए हैं। उन्होंने अपने समय के सभी विरोधी तत्त्वों का परिहार कर समन्वय की भावना को जनता के समक्ष रखा और एक सच्चे लोकधर्म की स्थापना की। वे समन्वयवादी कवि थे। उस समय नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक सभी दृष्टिकोणों से पतन की ओर जा रहा था। उनके सामने कोई आदर्श नहीं था। उच्च वर्ग अकर्मण्य और विलास–प्रिय था। निम्न वर्ग के लोगों का अपमान किया जाता था, वे अशिक्षित तथा निर्धन थे। ज्ञानियों के साथ समाज का कोई सम्पर्क नहीं था। संन्यासी होना साधारण–सी बात थी। फलतः सम्पूर्ण देश नाना प्रकार के सम्प्रदायों से भर गया था। नाथपन्ती योगियों के नेतृत्व में ज्ञान, भक्ति और कर्म का रूप अत्यन्त विकृत हो चुका था। राजनैतिक परिस्थिती भी भयंकर थी। हिन्दू जनता त्राहि–त्राहि कर रही थी। ऐसे अवसर पर गोस्वामीजी ने उस भ्रष्ट और पंगु समाज का उचित पथ–प्रदर्शन किया। शक्ति, शील और सौन्दर्य की साक्षात् मूर्ति राम के जीवन–चरित्र को लोक के धरातल पर प्रतिष्ठित कर उन्होंने जनता में लोकधर्म का महामन्त्र फूँका। सरस्वती के वरद् पुत्र ने अपनी वाणी का प्रयोग केवल जनकल्याण के लिए ही किया। तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में वैराग्य और ग्राहस्थ्य का, भक्ति और ज्ञान का, निर्गुण और सुगण का, आदर्श और व्यवहार का अपूर्व समन्वय प्रस्तुत किया है। उनका समस्त काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। किसी कवि के शब्दों में,

"तुलसी जो तुम आते न यहाँ,
तो ढोया करते हम धरा धाम यहाँ।"

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.तुलसीदास कवितावली 21
2.तुलसीदास रामचरित मानस 475
3.तुलसीदास रामचरित मानस 115
4.तुलसीदास रामचरित मानस 140
5.तुलसीदास रामचरित मानस 221
6.तुलसीदास रामचरित मानस 11 गोरखपुर, उ.प्र.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.net